शब्द–ब्रह्म
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका
E ISSN 2320 – 0871
17 सितम्बर 2018
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

संस्कृत वाङ्मय में वर्णित नारी सशक्तिकरण की वर्तमान में प्रासङ्गिकता

अनुराधा (शोधार्थी)
राष्ट्रीय संस्कृत संस्थान, वेदव्यास परिसर
बलाहर, कांगड़ा, हिमाचलप्रदेश, भारत

शोध संक्षेप

संस्कृत-वाङ्मय में ऐसे बहुत जीवनोपयोगी तथ्य उपलब्ध होते हैं जिससे यह ज्ञात होता है कि हमारा समाज कैसा होना चाहिए ? नारी तथा पुरुष समाज के मुख्य आधार हैं। उनकी समाज में क्या भूमिका है ? उन्नत तथा उत्कृष्ट समाज में नारी तथा पुरुष का क्या स्थान होना चाहिए ? वर्तमान में नारी की स्थिति पुरुषों से गौण होती हुई दृष्टिगोचर हो रही है। कम सम्मान, कम अधिकार, कम वेतन, कम राजनैतिक शक्तियां प्रदान करके उसे पुरुषों की तुलना में कम समझा जा रहा है, परन्तु हम सभी को यह नहीं भूलना चहिए कि किसी भी समाज में यदि महिलाओं को कम सम्मान प्रदान किया जाए तो उस समाज का विकास धीरे-धीरे रुक जाता है। पुरुष यदि पिता, भाई, बेटा है तो नारी भी माता, बहन, बेटी है। नारी और पुरुष को समान मानकर ही समाजिक व्यवस्था को व्यवस्थित किया जा सकता है। अतः वर्तमान में यदि हम समाज का वास्तविक विकास चाहते हैं तो नारी के सशक्तिकरण के लिए सदैव प्रयत्नरत रहना चाहिए। प्रस्तुत शोधपत्र में संस्कृत वाङ्मय में नारी सशक्तिकरण की वर्तमान में प्रासङ्गिकता पर विचार किया गया है।

संस्कृत वाङ्मय में नारी सशक्तिकरण

प्राचीन काल में हमारा भारत विश्वगुरु पद पर अलङ्कृत होकर अपने ज्ञान से समग्र जगत को आलोकित करता था। इसका सबसे मुख्य कारण यहां की सामाजिक व्यवस्था थी। यहां के लोगों में कर्त्तव्य-अकर्त्तव्य, उचित-अनुचित का बोध था। मध्यकाल में भारतीय समाज अनेक अनुचित बंधनों में जकड गया। फलस्वरूप महिलाओं की स्थिति अत्यंत दयनीय हो गयी। पुनर्जागरणकाल में समाजसेवकों और विद्वानों ने उन बंधनों को ढीला करने के लिए अनेक आन्दोलन चलाये, जिससे नारी अस्मिता के प्रति समाज जागरूक हुआ। हमारे देश के समृद्ध संस्कृत साहित्य में स्त्री स्वातंत्र्य के सम्बन्ध में बहुत गंभीरता से विचार किया गया है। स्त्री-पुरुष समानता की चर्चा विस्तृत रूप से मिलती है।

या देवी सर्वभूतेषु मातृरूपेण संस्थिता।
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः ॥[1]

किसी भी देश की सभ्यता और संस्कृति का मूल्याङ्कन नारी वर्ग को देखकर किया जाता है। जिस समाज में नारी जितनी सशक्त होगी वह समाज भी उतना ही सुदृढ़ और शक्तिशाली होगा। नारी के बिना समाज अधूरा है। नारी सशक्तिकरण का तात्पर्य नारी को पुरुष से श्रेष्ठ सिद्ध करना नहीं है और न ही नारी को सभी शक्तियां दे देने से है। नारी सशक्तिकरण का अर्थ है नारी और पुरुष को समान अधिकार देना, समान समझना,समान व्यवहार करना है। समाज में न तो पुरुषों का स्थान महिलाओं से कम है और न ही महिलाओं का स्थान पुरुषों से कम है, क्योंकि यह दोनों परमपिता परमात्मा के शरीर के दो भाग हैं। समाज एक रथ है, नारी और पुरुष उसके दो पहिए हैं। एक भी पहिया यदि ठीक से

शब्द–ब्रह्म
E ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका 17 सितम्बर 2018
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

काम नहीं करेगा तो समाज रूपी रथ की व्यवस्था अव्यवस्थित हो जाएगी। नारी के बिना पुरुष एक पहिए वाले रथ तथा एक पंख वाले पक्षी के समान है। नारी के बिना पुरुष की प्रत्येक क्रिया अधूरी है यथा भविष्यपुराण में भी इस बात को निरूपित किया गया है-

एकोचक्रो रथो यद्वत् एकपक्षो यथा खगः।
अभार्योऽपि नरस्तद्वत् अयोग्यः सर्वकर्मसु ॥

नारी पुरूष को समान मानकर प्राचीन काल में महिलाओं को समान अधिकार यथा - सम्पत्ति, आय का अधिकार, शिक्षा का अधिकार, शास्त्राध्ययन का अधिकार दिया था। बालिका का जन्म घर में प्रसन्नता का विषय होता था। वर्तमान में भ्रूणहत्या जैसे अनुचित कर्म को करने में जो लोग प्रवृत्त है उन्हें पुराणों का यह वाक्य स्मरण रखना चाहिए कि -

दशपुत्रसमा कन्या दशपुत्रान् प्रवर्द्धयन् ।
यत्फलं लभते मर्त्यः तल्लभ्यं कन्ययैकया ॥[3]

अर्थात् दस पुत्रों के पालने से जो फल प्राप्त होता है, वह एक पुत्री को पालने से मिलता है। आधुनिक समय में अनेक भ्रान्तियों तथा बुराइयों ने मानव-समाज में स्थान बना लिया है। दहेजप्रथा, बालविवाह, नारी-शोषण, भ्रूण हत्या, बलात्कार जैसी अनेक कुरीतियों ने समाज में अपने पैर पसार लिए हैं। गर्भ में बेटी का ज्ञान होते ही उसको जन्म से पूर्व ही मौत के मुंह में धकेल देते हैं, लेकिन शायद वे भूल जाते हैं कि उनको जन्म देने वाली जन्मदात्री भी कभी बेटी ही उत्पन्न हुई थी। इसी तरह से निरन्तर यदि भ्रूण हत्याएं चलती रही तो मां, बहन, बेटी, पत्नी कहां से समाज में आयेंगी ? लोग बालिकाओं की शिक्षा में व्यय नहीं करते, क्योंकि उनको दहेज इकट्ठा करना होता है। उनको लगता है कि दहेज देने से वह ससुराल में प्रसन्नता से रहेगी, किन्तु वे भूल जाते हैं कि शिक्षा ही वास्तविक धन-दौलत है। यदि पुत्री शिक्षित होगी तो वह स्वयं धनार्जन कर सकती है। शिक्षित महिला अपने पूरे परिवार को शिक्षित कर सकती है। आज बहुत से ऐसे लोग समाज में विद्यमान हैं जो नारी को मात्र उपभोग की वस्तु समझते हैं। उन्हें यह बात समझनी होगी कि नारी के उत्थान तथा सशक्तिकरण के बिना समाज की उन्नति असम्भव है। समाजिक, आर्थिक, राजनैतिक शक्तियां प्रदान करके उसे सुदृढ़ बनाकर ही समाज उन्नति के पथ पर अग्रसर होगा बिना उसके नहीं। आज भी कई स्थानों पर घर में लड़की का जन्म होना बोझ समझा जाता है। आधुनिक काल में समाज ने भौतिकस्तर पर तो उन्नति कर ली किन्तु मानसिक स्तर निम्न होता जा रहा है। हमें अपनी चिन्तन शैली को परिवर्तित करना पड़ेगा। हमारे पूर्वज जिस तरह से बालिकाओं को घर का आभूषण मानते थे वैसे आधुनिक समय में भी मानना पड़ेगा -

गृहेषु तनया भूषा भूषा संसत्सु पण्डिताः।[4]

वर्तमान में भी उन्हें चारदीवारी के भीतर नहीं रहने देना चाहिए। उन्हें अवसर देने चाहिए ताकि वे भी भिन्न- भिन्न क्षेत्रों में जाकर कार्य कर सकें। उसी से देश की प्रगति सम्भव है। समाज में बहुत से लोगों में यह गलत धारणा है कि स्त्रियों की बुद्धि पुरूषों से कम होती है इसलिए वह उचित निर्णय लेने में सक्षम नहीं होती। इस गलत धारणा के कारण भी महिलाओं को चारदीवारी से बाहर निकलकर काम करने की आज्ञा नहीं दी जाती, किन्तु हमारे ग्रन्थों में यह स्पष्ट रूप से वर्णित है कि नारियों की बुद्धि बहुत ही तीक्ष्ण होती है। हितोपदेश में नारियों की बुद्धि की तुलना शुक्राचार्य और बृहस्पति से करते हुए कहा गया है कि जो शास्त्र शुक्राचार्य और

शब्द–ब्रह्म
E ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका 17 सितम्बर 2018
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

बृहस्पति जानते हैं, वह सम्पूर्ण शास्त्र स्त्रियों की बुद्धि में स्वभाव से ही समाया रहता है

उशना वेद यच्छास्त्रं यच्च वेद बृहस्पतिः।
स्वभावेनैव तच्छास्त्रं स्त्रीबुद्धौ सुप्रतिष्ठितम् ॥

मातृशक्ति का भारत में सदैव पूजा व सम्मान होता आया है, किन्तु वर्तमान में स्थिति विपरीत हो गयी है। इसका एक कारण स्वयं नारियां भी हैं, क्योंकि मात्र पहनावा आधुनिक रखने से वे आधुनिक नहीं बनेंगी, उनको अपना चिन्तन भी उच्च स्तर का करना पड़ेगा। अपने प्रति हीन भावना को दूर करके उन्हें उन्नति के पथ पर अग्रसर होने के लिए सदैव प्रयत्नशील रहना चाहिए। वर्तमान में भी प्राचीन समय की तरह उसका आदर, सत्कार तथा सम्मान सम्भव है, किन्तु उन्हें वीरता, शालीनता, अनुशासन, उच्च चिन्तन इत्यादि गुणों को आत्मसात् करना पड़ेगा। केवल अधिकारों की प्राप्ति मात्र से उनका उद्धार सम्भव नहीं है, अपितु उन अधिकारों का सदुपयोग करके वे समाज में अपनी प्रतिष्ठा बना सकती हैं। स्नेह, प्रीति, त्याग की भावना, सहानुभूति इत्यादि गुणों को अपनी कमजोरी न मानते हुए शक्ति बनाकर उन्हें समाज में वन्दनीया तथा सर्वप्रिया बनना है। भारतवर्ष में नारियों का स्थान सदैव बहुत सम्माननीय तथा श्रेष्ठ रहा है। यहां प्रत्येक घर में स्त्रियों को देवी तथा शक्ति मानकर उनको सम्मान दिया गया है। हमारे शास्त्रों में भी वर्णित है कि जिस घर में स्त्रियों का सम्मान होता है वहां देवता निवास करते हैं अर्थात् वह घर स्वर्गतुल्य हो जाता है और जिस घर में उनका सम्मान नहीं होता वहां की सभी क्रियाएं असफल हो जाती हैं यथा-

यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवता ।
यत्रैतास्तु न पूज्यन्ते सर्वास्तत्राफला क्रिया ॥[6]

जिस समाज में स्त्रियों का सम्मान-सत्कार होता है वहां सदैव प्रसन्नता, सुख-समृद्धि तथा विकास का आगमन होता है। इसके विपरीत जिस समाज में वे दुखित तथा शोषित होती है वहां सदैव अप्रसन्नता, दुःख तथा अवनति ही आती है। मनुस्मृति में भी इसके बारे में वर्णन करते हुए कहा गया है कि -

शोचन्ति जामयो यत्र विनश्यत्याशु तत्कुलम् ।
न शोचन्ति तु यत्रैता वर्धते तद्धि सर्वदा ॥[7]

अर्थात् जिस कुल में बहूबेटियां क्लेश भोगती हैं वह शीघ्र नष्ट हो जाता है, किन्तु जहां इन्हें किसी तरह का दुःख नहीं होता वह कुल सर्वदा बढ़ता ही रहता है। जिन घरों में उनका आदर सम्मान नहीं होता उन घरों का पतन निश्चित रूप से हो जाता है। मनुस्मृति में इस बात का स्पष्ट उल्लेख किया गया है -

जामयो यानि गेहानि शपन्त्यप्रतिपूजिताः।
तानि कृत्याहतानीव विनश्यन्ति समन्ततः॥[8]

प्राचीन काल में भारत सोने की चिड़िया कहलाता था। उसका एक कारण यही है कि यहां के लोग जानते थे कि समाज में सभी का स्थान बराबर है। यहां के लोगों के उदात्त चरित्र से शिक्षा ग्रहण करके अन्य लोग उसका अनुसरण करते थे यथा-

एतद्देशप्रसूतस्य सकाशादग्रजन्मनः।
स्वं स्वं चरित्रं शिक्षेरन् पृथिव्यां सर्वमानवाः ॥

हमें पुनः उस सन्मार्ग का अनुसरण करना होगा जिसका निर्देश हमारे शास्त्रों में किया गया है। आज हम शास्त्रों के विपरीत आचरण करके महिलाओं को उचित स्थान नहीं दे रहे हैं तो हम भविष्य में होने वाले प्रलय को स्वंय आमन्त्रित कर रहे हैं। समाज में स्त्रियों को उचित अवसर प्रदान करने होगें जिससे अपाला, घोषा, लोपामुद्रा,

इन्द्राणी, गार्गी, विद्योतमा तथा विश्पला जैसी औरतों का निर्माण हो सके।

नारी इस सृष्टि में शक्ति का साक्षात् अवतार है इसी कारण दुर्गा रूप धारण करके दानवों से त्रस्त देवताओं का उद्धार भी इसी शक्ति ने किया। मां सीता के रूप में अवतार ले भगवान राम के इस लोक में आगमन के उद्देश्य को भी इसी ने साकार किया। नारी धैर्य, सहनशीलता, ममता, करूणा प्रेम का प्रतीक है। नारी समाज के लिए अनुपमासहकारिणी है, क्योंकि नर यदि जीवरूप में विचरण करता है तो नारी उसकी बुद्धिरूप में सहयोग करती है। यदि नर इन्द्ररूप में जलवृष्टि करता है तो नारी पृथ्वी रूप में प्राणियों का पोषण करती है। नर यदि कर्त्ता है तो नारी क्रियारूप है। वर्तमान समय में भी शास्त्रों के कथनानुसार सन्मार्ग पर चलने की नितान्त आवश्यकता है, जिससे नर और नारी को समाज में बराबर का स्थान तथा सम्मान प्राप्त हो। एक उत्तम श्रेष्ठ, सुव्यवस्थित समाज की स्थापना हो सके।

निष्कर्ष

वर्तमान में कुछ लोग अज्ञानतावश कई भ्रान्तियों के शिकार हैं। महिलाओं को वे पुरुषों से कम मानते हैं। ऐसे लोग नारी को पुरुष के अधीन रखना चाहते हैं। उसे कभी भी स्वतन्त्रता नहीं देना चाहते। उन्हें वैदिक परम्परा का ज्ञान देना आवश्यक है, जिससे वे स्त्री के प्रति सम्मान रखने के योग्य हो सकें। महिला से सशक्त होने में ही किसी भी सभ्य समाज की सुख, शांति और समृद्धि निहित है। हम अपने गौरवशाली संस्कृत-वाङ्मय का अध्ययन करें तथा नारियों के सशक्तिकरण में अपना महत्त्वपूर्ण सहयोग दें।

सन्दर्भ ग्रन्थ

1 दुर्गासप्तशती5.32-34 पृ.,128
2 भविष्यपुराण, ब्रह्मपर्व, 6/30
3 स्कन्दपुराण ,2/23/46
4 बृहद्धर्मपुराण 4/34
5 हितोपदेश,मित्रलाभ,122, पृ.,53
6 मनुस्मृति , 3/56
7 मनुस्मृति3/57
8 मनुस्मृति 3/58
9 मनुस्मृति 2/20